THRU the BIBLE



स्वागत है दोस्तों

ये **परमेश्वर के संसाधन** हैं जिन्हें आप अपनी गति से पढ़ सकते हैं।



किसी भी समय
सप्ताह के दौरान

Mon Tue Wed Thu Fri Sat Sun

अपनी सुविधानुसार

आप सारी सामग्री एक बार में पढ़ सकते हैं
(**30-45 मिनट** - पढ़ें, मनन करें और अमल करें)

या

हर दिन कितना पढ़ना है, यह चुनें

या

अपनी गति से रुकने और फिर से शुरू करने के लिए हमारे सुझाए गए विरामों का उपयोग करें।



प्रभु के साथ बिताया गया आपका समय
उनके साथ आपके रिश्ते को समृद्ध करे।

आपके विचार के लिए

जीवन जीने के लिए ईश्वर की बुद्धि का उपयोग क्यों करें? Page 04

इस धर्मग्रंथ अध्ययन का उपयोग कैसे करें Page 05

आपके अध्ययन के लिए
धर्मग्रंथों के माध्यम से ईश्वर और उनके वचनों से जुड़ना Page 07

आप ईश्वर की बुद्धि का उपयोग अपने जीवन में कैसे कर सकते हैं? Page 17

चिंतन करें और लागू करें
परमेश्वर के वचन का अनुप्रयोग Page 18

आपने क्या सीखा?
टिप्पणियाँ Page 22

क्यों
जीवन जीने के लिए **परमेश्वर की बुद्धि का** उपयोग करें?

क्योंकि

परमेश्वर ने हमें अपने पुत्र, हमारे प्रभु यीशु मसीह
की टीम में शामिल होने के लिए चुना है।

यीशु मसीह
हमारे प्रभु

उनका राज्य एक
प्रकाश का राज्य है

यह एक उच्च बुलावा है;
एक पवित्र बुलावा;
एक स्वर्गीय बुलावा

हम
स्वर्ग के नागरिक हैं

↓

पृथ्वी पर **मसीह के प्रतिनिधि** के रूप में भेजे गए

↓

परमेश्वर के वचन से सुसज्जित और सशक्त
जो हमें बताता है कि पृथ्वी पर स्वर्ग के नियमों (परमेश्वर के मानकों) के अनुसार कैसे जीना है।

परमेश्वर की इच्छा को
पृथ्वी पर लागू करना

- शिष्य बनाना
- समुदायों पर प्रभाव

परमेश्वर का नमक और प्रकाश होना

↓

विजय पाना
अंधकार का साम्राज्य
स्वार्थी दुनिया और शैतान पर

कैसे करें
उपयोग
इस धर्मशास्त्रीय संवाद का



प्रार्थना से शुरुआत करें
प्रत्येक पाठ शुरू करने से पहले, प्रभु से प्रार्थना करें कि वह इसका उपयोग आपको हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनुग्रह और ज्ञान में विकसित करने के लिए करें।



पहले बाइबल का अंश पढ़ें।
परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह आपकी आँखें खोलें और उनके वचन की आपकी समझ को गहरा करें।



यदि आप इस अंश पर डॉ. मैक्गी की पूरी शिक्षा सुनना चाहते हैं, तो TTB.org पर जाएँ, ऐप डाउनलोड करें, इसे YouTube पर देखें, या यह सामग्री पढ़ें।



प्रत्येक शिक्षा के बाद, आप अपने विचार के लिए या, यदि आप इसे एक समूह के रूप में पढ़ रहे हैं, तो चर्चा के लिए यहाँ सूचीबद्ध धर्मशास्त्रीय संवाद प्रश्नों को देख सकते हैं।



आत्मा से प्रार्थना करें कि वह आपको जो दिखाना चाहता है, उसे हृदयंगम करने में आपकी मदद करे।

मसीह का वचन तुम्हारे हृदय में सम्पूर्ण बुद्धि और शिक्षा सहित भरपूरी से बसे...
~ कुलुस्सियों 3:16

व्यक्तिगत तैयारी

व्यक्तिगत तैयारी का अर्थ है कि आप इस सामग्री को सप्ताह के दौरान स्वयं पढ़ें।

यदि आप किसी समूह का हिस्सा हैं, तो एक साथ मिलकर और साझा करके आपका योगदान सामूहिक आध्यात्मिक विकास को प्रोत्साहित करेगा।

मिलें बढ़ें बाँटें

मिलें, बाँटें और एक-दूसरे को प्रोत्साहित करें



मिलें
सप्ताह में एक बार

आओ **तैयार होकर**

टीटीबी की शिक्षाएँ पढ़ें, सुनें या देखें

कोई उपदेश नहीं। कोई शिक्षा नहीं। बल्कि **एक-दूसरे से साझा करना और सीखना।**

एक साथ मिलना

चर्चा करते हुए कि आपने **परमेश्वर की बुद्धि** से क्या प्राप्त किया

सीखना

धर्मग्रंथों के प्रश्नों पर चर्चा

अंत में प्रार्थना

अपने अगले मिलन के लिए **पहले से तैयारी करें**

आपके अध्ययन के लिए

धर्मग्रंथ: उत्पत्ति 2.1-25
पढ़ने का समय: 30-35 मिनट

प्रार्थना

आगे बढ़ने से पहले, आइए एक मिनट के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह हमारे हृदय, मन, कान और आँखों को उनकी दिव्य रचना को समझने के लिए मार्गदर्शन प्रदान करें।

बाइबल अंश

और प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य को भूमि की मिट्टी से रचा,
और उसके नथनों में
जीवन का श्वास फूंक दिया; और मनुष्य जीवित प्राणी बन गया।
- उत्पत्ति 2:7 (NKJV)

पुनरावृत्ति का नियम

प्रकाशन का परमेश्वर का सिद्धांत



उत्पत्ति 2 सृष्टि के विवरण को क्यों दोहराता है?

प्रकाशन के **परमेश्वर के महान सिद्धांत** का अनुसरण करता है, जिसे **पुनरावृत्ति का नियम** कहा जाता है।

परमेश्वर का आत्मा अक्सर **मुख्य तथ्यों को संक्षेप में बताता है** और फिर किसी **विशेष पहलू पर अधिक विस्तार से प्रकाश** डालता है।

यह विधि पूरे धर्मग्रंथ में देखी जाती है, जैसे:

व्यवस्थाविवरण - व्यवस्था की पुनरावृत्ति नहीं, बल्कि 40 वर्षों बाद व्याख्या पर ज़ोर देने वाला दृष्टिकोण

चार सुसमाचार- एक दृष्टिकोण, मसीह के जीवन और शिक्षा पर ज़ोर देने वाला

सब्त का दिन आर
एक आध्यात्मिक विश्राम



उत्पत्ति 2:1-3 (एनकेजेवी)
"तब परमेश्वर ने सातवें दिन को आशीष दी और उसे पवित्र ठहराया, क्योंकि उसमें उसने विश्राम किया अपने सारे काम से जो परमेश्वर ने रचा और बनाया था।"

क्या परमेश्वर ने इसलिए विश्राम किया क्योंकि वह थक गया था?



परमेश्वर ने इसलिए विश्राम किया क्योंकि उसका कार्य पूरा हो गया था, और कुछ और करने की आवश्यकता नहीं थी।

आध्यात्मिक सत्य: सब्त मसीह में विश्राम का प्रतीक है (इब्रानियों 4:9-10)।

विश्वासी **परमेश्वर के पूर्ण छुटकारे** में प्रवेश करते हैं

रोमियों 5:1
" क्योंकि हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें "

उद्धार पूर्ण है
हमें **इसके लिए कोई प्रयास नहीं करना पड़ता**;
मसीह ने यह सब कर दिया है।

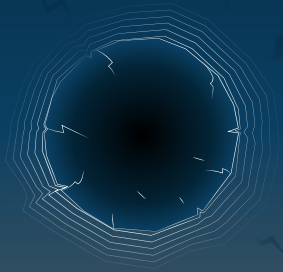
सारांश
पुनर्स्थापना के पहले 5 दिनों का

उत्पत्ति 2:4
"आकाश और पृथ्वी का इतिहास यह है जब वे सृजे गए,
जिस दिन प्रभु परमेश्वर ने पृथ्वी और आकाश को बनाया।"

सृष्टि नई नहीं थी, बल्कि एक पुनर्स्थापना थी

केवल परमेश्वर ही जानता है कि उत्पत्ति 1:2 से 31 में उसके कार्य से पहले इस विशाल जगत (उत्पत्ति 1:1) को बनाने के बाद से कितने साल बीत चुके हैं।





एक आपदा (संभवतः **शैतान के पतन** से जुड़ी) ने पृथ्वी को अराजकता और उजाड़ में छोड़ दिया (उत्पत्ति 1:2)।

उत्पत्ति 1 में परमेश्वर का कार्य



व्यवस्था लाई



घर तैयार किया, मानवजाति के लिए



पृथ्वी पौधों और पशु जीवन से आबाद की

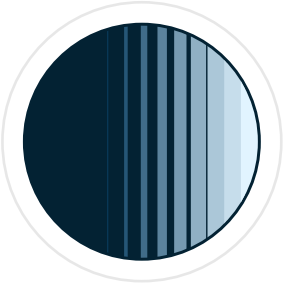
मनुष्य की रचना
ईश्वर का प्रत्यक्ष कार्य



उत्पत्ति 2:7
"और प्रभु परमेश्वर ने भूमि की मिट्टी से मनुष्य को रचा, और उसके नथनों में जीवन का श्वास फूंक दिया, और मनुष्य जीवित प्राणी बन गया।"

3 चरण सृष्टि के

चरण 1



अकार्बनिक पदार्थ
"आदि में, परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की रचना की" (उत्पत्ति 1:1)

चरण 2



जैविक जीवन
"परमेश्वर ने बड़े-बड़े समुद्री जीव और हर जीवित वस्तु की रचना की" (उत्पत्ति 1:21)

चरण 3



मानव जीवन
मनुष्य को एक अद्वितीय प्राणी के रूप में बनाया गया है, जो जानवरों से अलग है (उत्पत्ति 1:27-28)

मनुष्य को जानवरों से अलग क्या बनाता है?



विकास नहीं समझा सकता

- मानव वाणी
- मानव विवेक
- मानव व्यक्तित्व

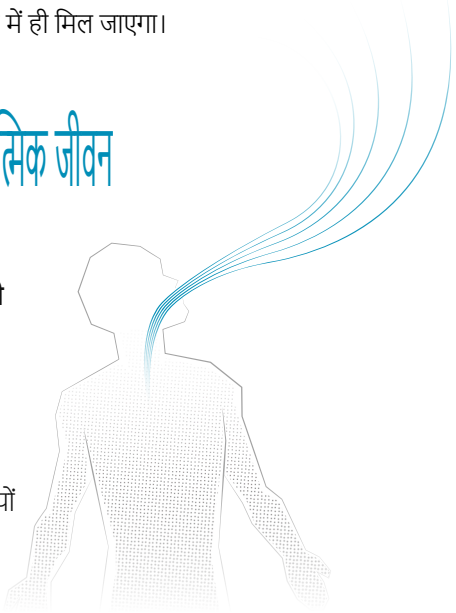
शारीरिक रूप से, मनुष्य मिट्टी से बना है, लेकिन मनुष्य मिट्टी से कहीं बढ़कर है।

मनुष्य की रचना पर प्रमुख शिक्षाएँ

मनुष्य धूल से बढ़कर है

शारीरिक रूप से , मनुष्य मिट्टी से बना है और मृत्यु के बाद मिट्टी में ही मिल जाएगा।

हालाँकि, मनुष्य केवल भौतिक नहीं है - परमेश्वर ने उसे आध्यात्मिक जीवन दिया है,
और उसके पास एक आत्मा है जो परमेश्वर के पास लौट जाएगी।



परमेश्वर के जीवन के श्वास ने मनुष्य को एक जीवित आत्मा दी

उत्पत्ति 2:7- "तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को भूमि की मिट्टी से रचा, और उसके नथनों में जीवन का श्वास फूँक दिया; और आदम जीवित प्राणी बन गया।"

परमेश्वर ने मनुष्य में जीवन **फूंक** दिया, जिससे वह अन्य सभी प्राणियों से अलग हो गया। "मनुष्य अब अपने सृष्टिकर्ता के साथ एक अद्भुत रिश्ते में प्रवेश कर चुका है।"

परमेश्वर द्वारा दिए गए जीवन के दो पहलू

शारीरिक/मनोवैज्ञानिक जीवन - एक मानव के रूप में सोचने, महसूस करने और कार्य करने की क्षमता।

आध्यात्मिक जीवन - परमेश्वर से जुड़ने, उसकी आराधना करने और उसके साथ अनंत काल का अनुभव करने की क्षमता।



मनुष्य का अपने रचयिता के साथ एक अनोखा रिश्ता है

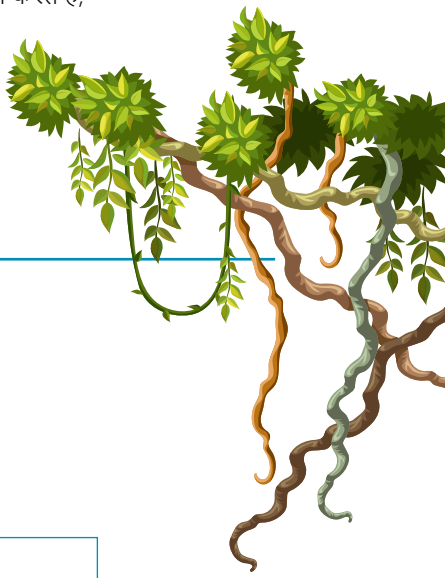
जानवरों के विपरीत, मनुष्यों में ईश्वर को जानने और उनकी आराधना करने और ईश्वर द्वारा कहे गए कार्यों को करके उनकी सेवा करने की आध्यात्मिक क्षमता होती है।

यह क्षमता मनुष्यों को अन्य सभी सृजित प्राणियों से अलग करती है।

परमेश्वर के लिए मनुष्य की क्षमता

क्योंकि परमेश्वर ने मनुष्य में प्राण फूँके, इसलिए उसे परमेश्वर के साथ एक सहज संबंध के साथ रचा गया। मनुष्य परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने में सक्षम है।

यही कारण है कि लोग अर्थ, उद्देश्य और आध्यात्मिक पूर्णता की खोज करते हैं, जो वास्तव में केवल परमेश्वर में ही पाई जा सकती है।



अदन का बगीचा
एक आदर्श घर

उत्पत्ति 2:8
"और यहोवा परमेश्वर ने पूर्व की ओर, अदन में एक वाटिका लगाई; और वहाँ आदम को जिसे उसने रचा था, रख दिया।"

बगीचा सुंदर था फिर भी कार्यात्मक



प्रत्येक वृक्ष **देखने में सुखद था और जिनके फल खाने अच्छा था** (उत्पत्ति 2:9)।

परमेश्वर ने **मनुष्य को जीवित रहने के लिए आवश्यक हर चीज़ प्रदान की**।



दो
विशेष वृक्ष



जीवन का वृक्ष
अनन्त जीवन प्रदान करता है



ज्ञान का वृक्ष
अच्छाई और बुराई का
निषिद्ध वृक्ष जिसने मनुष्य की आज्ञाकारिता की परीक्षा ली।

मनुष्य की पहली ज़िम्मेदारी
पृथ्वी पर शासन करना

उत्पत्ति 2:15
"तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को लेकर अदन की वाटिका में रख दिया, कि वह उसमें काम करे और उसकी रखवाली करे।"

मनुष्य केवल माली नहीं था!

उसका **सृष्टि पर प्रभुत्व था**

प्रकृति ने **उसकी आज्ञाओं** का पालन किया

उसे पृथ्वी की देखभाल, विकास और **उस पर शासन करना था**

पहला आदेश
और स्वतंत्र इच्छा

उत्पत्ति 2:16-17
"और यहोवा परमेश्वर ने आदम को यह आज्ञा दी, "तू वाटिका के किसी भी वृक्षों का फल खा सकता है;
Cपर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना: क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाएगा उसी दिन अवश्य मर जाएगा।"



डॉ. वर्नन मैक्गी ने कहा,

> मनुष्य वर्तमान में परीक्षण अवधि में है; देखिए, मनुष्य के पास स्वतंत्र इच्छा है। विशेषाधिकार हमेशा ज़िम्मेदारी के साथ आता है। यह एक निर्विवाद सत्य है।
> स्वतंत्र इच्छा वाले व्यक्ति को यह निर्धारित करने के लिए एक परीक्षा से गुजरना होगा कि वह परमेश्वर की आज्ञा मानेगा या नहीं।

मनुष्य परीक्षण अवधि में था।

चुनाव ने ज़िम्मेदारी पैदा की - आदम के पास स्वतंत्र इच्छा और जवाबदेही थी (स्वतंत्र इच्छा का ज़िम्मेदारी से उपयोग करने और परमेश्वर के प्रति जवाबदेह होने के लिए)।

मृत्यु = अलग होना

आध्यात्मिक मृत्यु (तत्काल)
पाप करते ही आदम ईश्वर से अलग हो गया था।



शारीरिक मृत्यु (अंततः)
आदम 900+ वर्षों तक जीवित रहा, लेकिन उसकी मृत्यु हो गई।



नारी की रचना
एक आदर्श साथी



उत्पत्ति 2:16-17
और यहोवा परमेश्वर ने आदम को यह आज्ञा दी, "तू वाटिका के किसी भी वृक्षों का फल खा सकता है; पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना: क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाएगा उसी दिन अवश्य मर जाएगा।"

आदम पहले अकेला क्यों था?



उसे अपनी साथी की आवश्यकता का एहसास कराने के लिए

उत्पत्ति 2:21-22
और यहोवा परमेश्वर ने आदम को गहरी नींद में डाल दिया, और वह सो गया; और उसने उसकी एक पसली निकालकर उसकी जगह मांस भर दिया। फिर उस पसली को, जिसे प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य से निकाला था, उसने स्त्री बना दिया, और उसे आदम के पास ले आया।"

हव्वा की रचना का महत्व

उसे आदम की **पसली** से लिया गया था, न कि उसके **सिर** से (उस पर शासन करने के लिए) और न ही उसके **पैरों** से (उसके अधीन रहने के लिए)।

वह उसे **पूरक और पूर्ण** करने वाली थी।

पहला विवाह
परमेश्वर की एकता की योजना

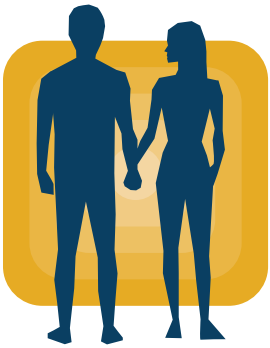
उत्पत्ति 2:23-24
“अब यह मेरी हड्डियों में की हड्डी और मेरे मांस में का मांस है; इसका नाम स्त्री होगा, क्योंकि यह नर में से निकाली गई है। इसलिए, पुरुष अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से जुड़ जाएगा, और वे एक तन बन जाएँगे।”

विवाह के लिए परमेश्वर की योजना

पुरुष अपने माता-पिता को **छोड़कर** अपनी पत्नी से **जुड़** जाता है।

वे **एक तन** बन जाते हैं - एक गहरा, आध्यात्मिक, और शारीरिक मिलन।

उसे यह एहसास दिलाने के लिए कि उसका **विवाह पवित्र है**, परमेश्वर द्वारा स्थापित है।



मनुष्य की निर्दोषता
पाप से पहले

उत्पत्ति 2:25
"और वे दोनों, अर्थात् पुरुष और उसकी पत्नी, नंगे थे, और लज्जित नहीं हुए।"

इसका क्या अर्थ है?

वे परमेश्वर की **महिमा से आच्छादित थे।**
कोई **पाप, दोष या लज्जा नहीं थी।**
उत्पत्ति 3 में पाप के कारण उनकी निर्दोषता शीघ्र ही **नष्ट हो जाने वाली थी।**

कैसे
उपयोग करें
ईश्वर की बुद्धि को
अपनी परिस्थिति में लागू करें

पढ़ें	शास्त्र से जुड़ाव
चिंतन करें	इसके बारे में सोचें
उत्तर दें	अनुप्रयोग प्रश्नों का
याद रखें	इसे अपने अवे अनुभाग में नोट करें।



डॉ. जे वर्नन मैक्गी कहते हैं,

“ हम पवित्र आत्मा की सेवकाई के दिन में जी रहे हैं, अनुग्रह के दिन में, जब परमेश्वर की आत्मा मसीह की बातों को ग्रहण करती है और उन्हें हम पर प्रकट करती है। ”

चिंतन करें और लागू करें

1. चिंतन

यदि ईश्वर ही वह हैं जिन्होंने आपमें जीवन फूंका है और आपको समस्त सृष्टि से अलग बनाया है, तो इस सत्य को आपकी प्राथमिकताओं, निर्णयों और दैनिक जीवन को कैसे आकार देना चाहिए?

- क्या आप **जानबूझकर अपने सृष्टिकर्ता के साथ अपने रिश्ते को जानने और उसमें आगे बढ़ने का प्रयास करते हैं?**
- यह समझना कि आपको **ईश्वर के साथ रिश्ते** के लिए बनाया गया है, **आपके काम, रिश्तों और व्यक्तिगत लक्ष्यों** के प्रति आपके दृष्टिकोण को कैसे बदलता है?
  आप अपने जीवन के किन क्षेत्रों में ईश्वर के संप्रभु **अधिकार के अधीन** रहने के लिए संघर्ष करते हैं?
- आप **ईश्वर के प्रति जवाबदेही** के साथ सक्रिय रूप से कैसे जी सकते हैं, यह जानते हुए कि आपका **जीवन, उद्देश्य और भाग्य** उससे जुड़े हैं?



"क्योंकि हम उसी में जीवित रहते, और चलते फिरते, और स्थिर रहते हैं;
जैसे तुम्हारे कितने कवियों ने भी कहा है, 'हम तो उसी के वंश भी हैं।..."
प्रेरितों के काम 17:28

चुनौती

इस हफ़्ते अपनी **प्राथमिकताओं, आदतों और फ़ैसलों** का मूल्यांकन करने के लिए समय निकालें। क्या ये सचमुच आपके सृष्टिकर्ता पर केंद्रित हैं, या ये आत्म-निर्भरता की ओर बढ़ गए हैं?
आप अपने जीवन के सभी क्षेत्रों में **परमेश्वर को सर्वोपरि रखने** के लिए क्या बदलाव ला सकते हैं?

2. चिंतन



यदि परमेश्वर, जो प्रेम है (1 यूहन्ना 4:8), ने मनुष्य को स्वतंत्र इच्छा दी है, तो यह हमारे साथ एक सच्चे रिश्ते की उसकी इच्छा के बारे में क्या प्रकट करता है?

परमेश्वर ने आदम और पूरी मानवता को चुनने की आज़ादी क्यों दी?
स्वतंत्र इच्छा, नियंत्रण के बजाय परमेश्वर के प्रेम को कैसे प्रदर्शित करती है?

- **चुनने की आपकी क्षमता, परमेश्वर पर भरोसा करने और उसकी आज्ञा मानने की आपकी ज़िम्मेदारी को कैसे दर्शाती है?**
- **क्या आप परमेश्वर की आज्ञाओं को प्रतिबंध मानते हैं या अपने जीवन पर उसकी प्रेमपूर्ण सुरक्षा?**
  (रोमियों 13:10 – "प्रेम पड़ोसी को कोई हानि नहीं पहुँचाता;
  इसलिए प्रेम ही व्यवस्था को पूरा करता है।")
- **परमेश्वर से अपने पूरे हृदय, प्राण और मन से प्रेम करने का क्या अर्थ है?**
  (मत्ती 22:37-38)



""यदि तुम मुझसे प्रेम करते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानो।"
यूहन्ना 14:15

चुनौती

उस समय पर विचार करें जब आप आज्ञाकारिता और अवज्ञा के बीच निर्णय लेने में संघर्ष कर रहे थे। इसने परमेश्वर के साथ आपके रिश्ते को कैसे प्रभावित किया? इस सप्ताह, जानबूझकर **आज्ञाकारिता के माध्यम से परमेश्वर पर भरोसा और प्रेम करने का चुनाव करें**, यह स्वीकार करते हुए कि उसकी आज्ञाएँ आपके प्रति उसके प्रेम और देखभाल की अभिव्यक्ति हैं।

3. चिंतन

विवाह और परिवार के लिए परमेश्वर की रचना को समझना हमें पाप से प्रभावित इस दुनिया में बाइबल के रिश्तों को पुनर्स्थापित करने में कैसे मदद करता है?

उत्पत्ति 2:24
"इस कारण पुरुष अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा और वे एक ही तन बने रहेंगे।"

निम्नलिखित पर विचार करें

परमेश्वर ने आदम और हव्वा दोनों को समान, सह-सक्षम, और सह-संगत साथी के रूप में बनाया। यह आज पुरुष और महिला की भूमिकाओं पर सामाजिक दृष्टिकोण को कैसे चुनौती देता है?

- **पाप ने स्त्री-पुरुष के रिश्ते को बिगाड़ दिया है**, जिसके परिणामस्वरूप पुरुषों का वर्चस्व और समानता के लिए निरंतर संघर्ष हुआ है। मसीह विवाह और परिवार में इस संतुलन को कैसे पुनर्स्थापित करता है? (इफिसियों 5:22-33)
- **विवाह पवित्र है और ईश्वर द्वारा स्थापित है।** आप अपने रिश्तों (चाहे विवाहित हों या अविवाहित) को मसीह के अधीन एकता, प्रेम और पारस्परिक समर्पण के ईश्वर के मूल उद्देश्य के साथ कैसे जोड़ सकते हैं?

- **विवाह और परमेश्वर के प्रति जवाबदेही:** परमेश्वर का यह सिद्धांत कि पुरुष और स्त्री अपने माता-पिता की जवाबदेही से मुक्त हो जाएँ, जिससे पति और पत्नी दोनों परमेश्वर के अधिकार में आ सकें, एक जोड़े को उसकी संप्रभुता के अधीन जीवन का अनुभव करने का एक महत्वपूर्ण अवसर कैसे प्रदान करता है?
- **आदम और हव्वा नग्न थे**, लेकिन उन्हें कोई शर्म नहीं आई। यह हमें उस आध्यात्मिक, भावनात्मक और संबंधपरक शुद्धता के बारे में क्या बताता है जो परमेश्वर ने मानवता के लिए निर्धारित की थी? यह परमेश्वर के किस गुण को हमारे सामने प्रकट करता है?

चुनौती

इस सप्ताह **1 कुरिन्थियों 11 और इफिसियों 5** पर विचार करें। यदि आप विवाहित हैं, तो अपने जीवनसाथी के साथ चर्चा करें कि **मसीह के प्रेम और समर्पण का आदर्श कैसे बनाया जाए उसके वचन के अनुसार**। यदि आप अविवाहित हैं, तो अपने आप से पूछें कि आप आज अपने जीवन में रिश्तों के लिए परमेश्वर की योजना को कैसे बनाए रख सकते हैं।

4. सुसज्जित करें और साझा करें

उत्पत्ति 2 के सत्यों—परमेश्वर की सृष्टि, मनुष्य के निर्माण में उसकी व्यक्तिगत संलग्नता, उसका प्रावधान, उद्देश्य और रिश्तों के लिए उसकी योजना—का उपयोग आप सुसमाचार की व्याख्या करने और किसी को अपने सृष्टिकर्ता के साथ रिश्ता बनाने के लिए आमंत्रित करने के लिए कैसे कर सकते हैं?

आपका निष्कर्ष

'**परमेश्वर की बुद्धि**' को अपने जीवन में समाहित करना।

मैक्गी का उद्धरण



"ईश्वर ने पुरुष को नेतृत्व करने के लिए बनाया था—उसने उसे पहले बनाया—और उसने स्त्री को उसके पीछे आने के लिए बनाया। पुरुष आक्रामक है—ईश्वर ने उसे शारीरिक रूप से भी ऐसा ही बनाया है—और स्त्री प्रतिक्रिया देने वाली है।

मुझे यह मत कहो कि एक पत्नी को अपने पति से प्रेम करना ही होगा। ईश्वर ऐसा नहीं कहते। ईश्वर कहते हैं कि उसे उसकी बात माननी है। अगर वह उससे कहता है, "मैं तुमसे प्रेम करता हूँ," तो वह भी उसे जवाब में कहेगी, "मैं तुमसे प्रेम करती हूँ।" "

THRU the BIBLE

हमारे संसाधनों तक पहुँचें

टीटीबी ग्लोबल वेबसाइट तक पहुंचने के लिए, यहां जाएं

www.ttb.org

टीटीबी ग्लोबल ऐप डाउनलोड करने के लिए **क्यूआर कोड** स्कैन करें।
ऐप के ज़रिए आप हमारे ऑडियो स्टडी प्रोग्राम को आसानी से एक्सेस कर सकते हैं।

App Store
IOS उपयोगकर्ताओं के लिए

Google Play Store
एंड्रॉइड उपयोगकर्ताओं के लिए